कोविड ट्रीटमेंट फैसिलिटी (पेड)
राज्य सरकार के निर्देशानुसार
जनरल वार्ड । आईसीयू
ए.सी. वार्ड | प्राइवेट ए.सी. रूम
प्राइवेट नॉन ए.सी. फैमिली सुइट
प्राइवेट ए.सी. फैमिली सुइट
* सभी अतिरिक्त सुविधाएं अतिरिक्त भुगतान पर उपलब्ध
9649904849, 9461221718

टी मीडिया

tmedia@tantiauniversity.com

टांटिया समूह, श्रीगंगानगर का गौरवशाली प्रकाशन

बीकानेर सम्भाग में पहली बार
विश्व की अत्याधुनिक व बड़ी
M.R.I. (एम.आर.आई.)
1.5 Tesla (16 Channel)
मशीन द्वारा जांच अब श्रीगंगानगर में

टांटिया जनरल हॉस्पिटल
सुखाड़िया मार्ग, श्रीगंगानगर
0154-2481505, 94139-50724
आपातकालीन सुविधाएं 24 घंटे उपलब्ध

वर्ष : 01 | अंक : 08 | पाक्षिक | श्रीगंगानगर | 30 सितम्बर, 2020 | मोबाइल : 9461221718, 8005519250

चौबीस घंटे हेल्प डेस्क, प्रोटोकॉल की पूरी पालना

मरीजों-परिजनों की संतुष्टि सर्वोपरि, अपेक्षाएं पूरी

कोरोना काल में जन-जन के मन में मान पा रहा है जन सेवा हॉस्पिटल

श्रीगंगानगर।

टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) कोरोना काल में जन-जन के मन में मान पा रहा है। इसकी कोविड डेडिकेटेड सुविधाओं में चौबीस घंटे हेल्प हेस्क कार्यरत है। सरकार की एडवाइजरी एवं प्रोटोकॉल की पूरी तरह पालना करते हुए मरीजों तथा परिजनों की संतुष्टि को सर्वोपरि रखा जा रहा है, अपेक्षाओं पर खरा उतर रहे हैं। यही वजह है कि अभी तक 150 से अधिक कोरोना मरीज सेवाओं का लाभ उठा चुके, लगभग सभी स्वस्थ होकर घर लौटै हैं। मृत्यु दर 2 प्रतिशत से भी कम है।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी बलजीत सिंह के अनुसार विशेषज्ञ चिकित्सक, अनुभवी एवं प्रशिक्षित नर्सिंग ऑफिसर्स अपनी विश्वस्तरीय अत्याधुनिक सुविधाओं तथा उपकरणों के साथ मनोयोग से जुटे हुए है। सरकार के आदेश की हर तरह से पालना की जा रही है। मरीज एवं परिजन शीशे से आर-पार आपस में न केवल एक-दूसरे को देख पा रहे हैं, दोनों तरफ लगे माइक-साउंड सिस्टम के माध्यम से बात भी कर पा रहे हैं। मरीज की स्थिति के बारे में परिजनों को अपडेट रखा जा रहा है। मरीजों को उनके परिजन कैमरे से भी देख पाए, इसकी व्यवस्था भी की जा रही है। कोई परिजन पीपीई किट पहन कर पूरी सुरक्षा के साथ मरीज के नजदीक जाकर उनसे मिल भी सकता है।

Case 1 स्ट्रेचर पर आए, चलकर गए

बीकानेर क्षेत्र का लगभग 45 वर्षीय मरीज कोरोना पॉजिटिव तो था ही, मूत्र संबंधी बीमारी से भी पीड़ित था। उन्हें स्ट्रेचर पर जन सेवा हॉस्पिटल ला कर भर्ती करवाया गया। उपचार के बाद बिलकुल स्वस्थ हो गए और चलकर अपने घर गए।

Case 2 मूर्छा दूर, खुशी भरपूर

हनुमानगढ़ इलाके से आए करीब 85 साल के मरीज की मूर्छा वाली स्थिति थी, फेफड़ों में पानी भी भरा हुआ था। वेंटिलेटर पर लेना पड़ा। टीम ने खूब सेवा की, उपचार के बाद सही हो गए और खुशी से भरपूर होकर परिजनों के संग लौटे।

Case 3 कई तरह की थी समस्याएं

श्रीगंगानगर के एक मरीज के कोरोना के अलावा कई तरह की समस्याएं थीं, सिटी स्केन आदि जांच के बाद उपचार शुरू किया गया और वे धीरे-धीरे सभी समस्याओं से समाधान पाते गए। थोड़ा समय जरूर लगा लेकिन पूरी संतुष्टि के बाद स्वस्थ होकर गए।

Case 4 परेशानी थी भारी, बोले हैं आभारी

सिरसा क्षेत्र की एक वृद्धा को कई तरह की परेशानी थी। वे और उनके परिजन काफी चिन्तित थे लेकिन अच्छी बात यह रही कि मनोबल बनाए रखा और उपचार के दौरान पूरा सहयोग दिया। स्वस्थ होकर जाते समय सभी का आभार जताते हुए कहा कि बस यूं ही जुटे रहें।

घबराएं नहीं जागरुकता बढ़ाएं और सीटी स्केन आदि जांच जरूर करवाएं

यह सही है कि वैश्विक महामारी कोरोना वायरस कोविड-19 का प्रकोप तथा भयावहता में बढ़ोतरी हो रही है लेकिन इसके साथ-साथ जितनी जरूरत है उतनी जागरुकता अभी भी नहीं बढ़ रही। कोरोना पॉजिटिव आने पर मरीज की पूरी केयर की जानी चाहिए। किसी प्रकार से घबराने की आवश्यकता नहीं, बस सजगता जरूरी है। योग्य चिकित्सक का परामर्श लेकर उपचार करवाना चाहिए। सीटी स्केन एवं जो भी जांच बताई जाए, करवाने में किसी प्रकार की कोताही नहीं होनी चाहिए। सीटी स्केन का महत्व तो बहुत अधिक है। कई बार वैसे रिपोर्ट नेगेटिव आती है लेकिन सीटी स्केन में वायरल निमोनिया आता है। जांच के आधार पर ही आगे उपचार होता है।

कोरोना पॉजिटिव मरीज के परिजनों का सावधानी रखना बहुत आवश्यक है। पॉजिटिव मरीज के अलावा परिजनों को भी मास्क पहन कर रखना चाहिए, हाथों में दस्ताने पहनने चाहिए। मरीज अगर घर में है तो कमरा अलग होना चाहिए, स्नान-शौच के लिए भी अलग व्यवस्था होनी चाहिए। मरीज का मनोबल कम नहीं होने देना चाहिए, उनमें यह आत्मविश्वास बढ़ाया जाए कि थोड़े समय में बिलकुल स्वस्थ हो जाएंगे। मरीज को गुणवत्ता का आहार देना चाहिए, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए इसका ध्यान रखना आवश्यक है। कोरोना को लेकर मरीजों एवं उनके परिजनों तथा परिचितों की चिंता अपनी जगह सही है, इसके बावजूद उन सभी को इलाज करने वाले चिकित्सक, नर्सिंग ऑफिसर्स, चिकित्सा संस्थान आदि का भरपूर सहयोग करना चाहिए। सभी मिलजुल कर एक-दूसरे का सहयोग करेंगे तभी इस वैश्विक महामारी से आए संकट को टाल पाएंगे।

डॉ. संजय सोलंकी

क्षय रोग विशेषज्ञ, डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल)

टांटिया हॉस्पिटल ने हड्डी जोड़ व प्रत्यारोपण के क्षेत्र में बनाई खास पहचान

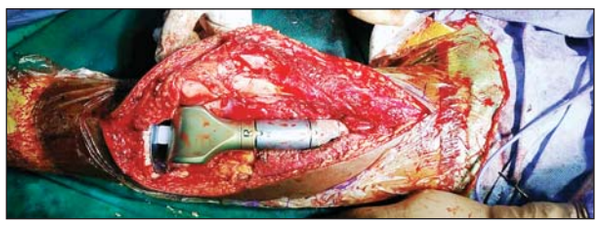

श्रीगंगानगर।

सुखाड़िया मार्ग स्थित टांटिया जनरल एंड मल्टीस्पैशिलिटी हॉस्पिटल ने हड्डी जोड़ व प्रत्यारोपण के क्षेत्र में खास पहचान बनाई है। हॉस्पिटल के वरिष्ठ आर्थोपेडिक्स सर्जन डॉ. आशीष छाबड़ा की विशेषज्ञता से मरीजों तथा उनके परिजनों को भारी लाभ मिल रहा है। हाल ही में डॉ. छाबड़ा ने एक और बड़ी सफलता प्राप्त की है। घुटने में कैंसर की शिकायत पर कहां तो पहले मरीज के पांव काटने की नौबत आती थी, डॉ. छाबड़ा ने ऐसे एक मरीज के 7 घंटे के जटिल ऑप्रेशन से स्टील की नई हड्डी डाली। ऐसा ऑप्रेशन इलाके में संभवतः पहली बार हुआ है। तीसरे दिन मरीज को छुट्टी मिल गई और वह अच्छी तरह चलने-फिरने लगा है। श्रीबिजयनगर क्षेत्र के इस 45 वर्षीय मरीज के घुटने में कैंसर की शिकायत थी। दर्द और सूजन से चला भी नहीं जा रहा था, जीवन अंधकारमय लग रहा था। डॉ. छाबड़ा ने बारीकी से पूरी जांच की, एमआरआई करवाई और इसमें कैंसर पाया। बायोप्सी में भी कैंसर की पुष्टि हुई। इस पर उन्होंने ऑप्रेशन का निर्णय किया और कैंसर प्रभावित 15 सेमी. की हड्डी सफलता से निकाल दी तथा स्टील की नई हड्डी डाल दी।

डॉ. आशीष छाबड़ा

डॉ. आशीष छाबड़ा की विशेषज्ञता का मिल रहा भारी लाभ

सफलताओं की लम्बी सूची : डॉ. छाबड़ा की सफलताओं की सूची बहुत लम्बी है। उन्होंने लगभग 22 साल की ऐसी एक युवती का इलाज किया जो हर समय लम्बे पांव पसारने को मजबूर थी। उसका पहले एक कूल्हा बदला और फिर दूसरा। ठीक होने के बाद उसकी अब शादी हो गई है, पालथी तक मारकर बैठने लगी है। करीब 50 वर्ष का एक मरीज तो शौच तक खड़े-खड़े करने को मजबूर था, पूरा शरीर काला हो रहा था। कूल्हे बदलने से उसका जीवन सामान्य हो गया है। इसी तरह एक मरीज जिसकी आयु 62 साल थी, बिस्तर पर ही लेटे रहना ही जिन्दगी बन गई थी। उसे गठिया था, कूल्हे बदलने से जीवन में जैसे बहार आ गई और अब सही ढंग से जीवन यापन करने लगा है।

सुविधाओं से भरपूर : टांटिया हॉस्पिटल का आर्थोपेडिक एंड ट्रोमा केयर विभाग सुविधाओं से भरपूर है। इसमें हड्डी प्रत्यारोपण, दूरबीन से घुटने की लिंगामेंट व वाशर का ऑप्रेशन, फ्रैक्चर व जोड़ों की सभी बीमारियों का आधुनिक चिकित्सा से इलाज, दुर्घटनाग्रस्त फ्रैक्चर (ट्रोमा) का मॉड्यूलर ऑप्रेशन थियेटर व अत्याधुनिक मशीनें, जन्म से टेढ़े पैरों वाले बच्चे का इलाज, जोड़ों की सम्पूर्ण जांच (आर्थोस्कॉपी), फिजियोथैरेपिस्ट की सुविधा, 24 घंटे इमरजैंसी सुविधा आदि उपलब्ध है।

टीयू में हुईं परीक्षाएं, सरकारी एडवाइजरी व गाइड लाइन का रखा गया पूरा ध्यान

श्रीगंगानगर।

टांटिया यूनिवर्सिटी (टीयू) में हुई विभिन्न परीक्षाओं में कोरोना वायरस कोविड-19 संबंधी एडवाइजरी एवं गाइड लाइन का पूरा ध्यान रखा गया। टीयू के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) एम.एम. सक्सेना के कुशल मार्गदर्शन में परीक्षा नियंत्रक डॉ. राजेंद्र गोदारा एवं उनकी टीम ने खूब मेहनत की। परीक्षा 15 सतम्बर को शुरू हुई और एक पखवाड़े तक व्यवस्थित ढंग से चली। परीक्षा के दौरान जिस कक्ष में पहले 35 परीक्षार्थी बैठते थे, अधिकतम 18 को बैठाने की व्यवस्था की गई। परीक्षार्थियों के पूरे समय मास्क लगाए रखना सुनिश्चित किया गया। उन्हें साथ में सेनिटाइजर रखने तथा खुद का पानी लाने का भी कहा गया था।

यूनिवर्सिटी की तरफ से भी सेनिटाइजर एवं पानी आदि की व्यवस्था की गई। यूनिवर्सिटी के मुख्य द्वार से परीक्षार्थियों को झुंड के रूप में न तो आने दिया गया और न ही झुंड में जाने दिया गया। परीक्षा कक्ष के बाहर सभी के हाथ सेनिटाइजर से धुलवाए गए, थर्मो स्केनर से जांच की गई। परीक्षा कक्षों को भी सेनिटाइज करवाया गया। सभी परीक्षार्थियों के नाम, मोबाइल नम्बर आदि अंकित कर ही बारी-बारी अंदर प्रवेश दिया गया। शिक्षकों के लिए भी फेसशील्ड, मास्क, सेनिटाइजर आदि की अतिरिक्त व्यवस्थाएं की गई। यूनिवर्सिटी के अंतर्गत नर्सिंग, बीएड, एमएड, बीपीएड, एमपीएड, लॉ, बीएएलएलबी, फार्मेसी, आयुर्वेद, होम्योपैथी, एमए की परीक्षाएं अभी आयोजित की गई।

जिले में पहली बार संयुक्त प्रवेश परीक्षा आयोजित

जिले में पहली बार संयुक्त प्रवेश परीक्षा टांटिया यूनिवर्सिटी (टीयू)में हुई। विधि संकाय में केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित इस संयुक्त प्रवेश परीक्षा के लिए अधिष्ठाता डॉ. सौरभ गर्ग के नेतृत्व खूब तैयारी की गई और इस महत्वपूर्ण परीक्षा को व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करवाया। परीक्षा तीन दिन, दो पारियों में सम्पन्न करवाई गई। केंद्रीय विश्वविद्यालय, पंजाब की ओर से नियुक्त पर्यवेक्षक प्रो. तरूण अरोड़ा की मौजूदगी में सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कोरोना वायरस कोविड-19 संबंधी समस्त एडवाइजरी का पूरा ध्यान रखा गया। वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. के.के. अरोड़ा भी इस दौरान मौजूद रहे। डॉ. गर्ग ने बताया कि संयुक्त प्रवेश परीक्षा देश के 14 केंद्रीय विश्वविद्यालय तथा 4 राज्य विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आयोजित की गई। पूरे देश में प्रवेश के लिए 141 केंद्र बनाए गए, श्रीगंगानगर जिले में इस प्रवेश परीक्षा को करवाने का प्रथम अवसर टांटिया यूनिवर्सिटी को प्राप्त हुआ।

टी-क्लिक

अन्नदाता की मेहनत न्यारी, तभी तो खिलती क्यारी-क्यारी।

कृषि में सिरमौर श्रीगंगानगर को अन्न का कटोरा बोला जाता है। गंगानगरी किन्नू, गंगानगरी ग्वार, गंगानगरी गुलाब की विशिष्ट पहचान है। अन्नदाता, किसान हाड तोड़ मेहनत करते हैं और खरीफ-रबी में रब की मेहर पाते हैं। किसान की मेहनत का ऐसा एक मनोरम दृश्य कैद किया है बहुआयामी प्रतिभा के धनी, वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. अरूण कुमार सी. पवार ने।

टी क्लिक : टांटिया समूह के साथी समूह के किसी भी संस्थान, सेवाओं, सुविधाओं अथवा इंफ्रास्ट्रक्चर को दर्शाती या अन्य कोई संदेश देती तस्वीर 'टी क्लिक' के लिए प्रेषित कर सकते हैं। फोटोग्राफी में रुझान हो तो उठाइए कैमरा और यादगार पल को कैद कर अपने नाम व विवरण के साथ *tmedia@tantiauniversity.com* **पर मेल कर दीजिए।**

टी-ब्रीफ

डॉ. शर्मा अंतरराष्ट्रीय जनरल के सम्पादक मंडल के सदस्य मनोनीत

श्रीगंगानगर।

डॉ. विनोद शर्मा

टांटिया यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार शर्मा को बोहल शोध मंजुषा ने अपने अंतरराष्ट्रीय रिसर्च जनरल के सम्पादक मंडल का सदस्य मनोनीत किया है। इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पर डॉ. शर्मा को खूब बधाइयां मिल रही हैं।

डॉ. विश्वास की राष्ट्रीय वेबिनार में सहभागिता

श्रीगंगानगर।

प्रो. आरके विश्वास

टांटिया यूनिवर्सिटी के होम्योपैथी कॉलेज के प्रो. (डॉ.) आर. के. विश्वास की दी वॉयस ऑफ होम्योपैथ-2020 विषयक राष्ट्रीय वेबिनार में सहभागिता रही। उन्होंने वक्ता के रूप में इसमें भाग लिया। ऑल इंडिया होम्योपैथिक स्टूडेंट्स एवं यूथ एसोसिएशन की इस वेबिनार में देश के ख्यातिनाम विशेषज्ञों ने भाग लिया।

जन सेवा हॉस्पिटल के दंत रोग विभाग में आते हैं करहाते, जाते हैं खिलखिलाते

डॉ. सी.पी. अग्रवाल सफलता के पर्याय

श्रीगंगानगर।

टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) के दंत रोग विभाग में काफी मरीज दर्द की वजह से कराहते हुए आते हैं, इलाज के बाद घर जाते हैं खिलखिलाते हुए। दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. सी. पी. अग्रवाल सफलता के पर्याय हैं। उनकी विशेषज्ञता से मरीज अपनी दांतों संबंधी समस्याओं का समाधान पा रहे हैं। जन सेवा हॉस्पिटल का दंत रोग विभाग अत्याधुनिक विश्वस्तरीय सुविधाओं से परिपूर्ण है। विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. अग्रवाल एवं उनकी अनुभवी-प्रशिक्षित टीम मरीजों की अपेक्षाओं पर खरा उतरती है। गत दिनों डॉ.

अग्रवाल ने लगभग 40 साल के एक मरीज के नीचे के जबड़े के अगले भाग में दो कृत्रिम जड़ प्रत्यारोपित की। उन्होंने इस जटिल कार्य को अपनी विशेषज्ञता एवं कार्यकुशलता के चलते पूरी सफलता से किया। ऐसे कितने ही केस हैं जिनमें डॉ. अग्रवाल ने दंत रोगियों तथा उनके परिजनों को राहत प्रदान की है।

हो रहा है सभी तरह का इलाज : जन सेवा हॉस्पिटल के दंत रोग विभाग में दांतों से संबंधित सभी तरह का सफल इलाज हो रहा है। टेढ़े-मेढ़े दातों का इलाज, हड्डी में दांत लगाना, लचीला दांतों का सैट लगाना, फिक्स दांत लगाना, दांतों की नसों का इलाज, मसूड़ों का इलाज, लेजर से दांतों का भरना, पीले दांतों का इलाज, दांतों को बिना ददज़ के निकालना, दांतों की सफाई, दांतों की फ्लिंग आदि कार्य दंत रोग विशेषज्ञ डॉ. सी.पी. अग्रवाल कर रहे हैं।

दिल का रखें दिल से ख्याल

सीटीवीएस विभाग ने मनाया विश्व हृदय दिवस

श्रीगंगानगर।

टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) के सीटीवीएस विभाग ने विश्व हृदय दिवस (29 सितम्बर)मनाया। टांटिया जनरल एंड मल्टीस्पैशलिटी हॉस्पिटल में रखे गए संक्षिप्त कार्यक्रम में इस विशिष्ट दिन की मंगलकामनाएं दी गई। इस मौके पर दिल संबंधी बीमारियों की रोकथाम के उपयोगी टिप्स दिए तथा कहा गया कि छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर दिल की बीमारियों से बचा जा सकता है। इस दिवस का महत्व साझा करते हुए कहा कि दिल से जुड़ी बीमारियों को बढ़ने नहीं देना चाहिए। किसी प्रकार की परेशानी लगते ही या लक्षण नजर आते ही विशेषज्ञ चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए और सलाह के मुताबिक उपचार करवाना चाहिए।

सीटीवीएस सर्जन दम्पती डॉ. आशीष एम. अग्रवाल एवं डॉ. दिव्या ए. अग्रवाल, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रेम मित्तल, डॉ. महेश माहेश्वरी, डॉ. सीमा माहेश्वरी, डॉ. विशु टांटिया, डॉ. नेहा अग्रवाल, मीडिया हैड डॉ. विकास सचदेवा, डॉ. आनंदिनी राजपूत मित्तल, डॉ. अनिल खुराना, डॉ. आशीष छाबड़ा, डॉ. स्मृति अरोड़ा, डॉ. अभिषेक गुप्ता, डॉ. एम. जुबेर, डॉ. महेश के. मोहता, डॉ. मनोज गर्ग, डॉ. पी. सी. स्वामी, डॉ. सी.पी. अग्रवाल, सुरेंद्र नाथ, जसबीर सिंह, अजय कुमार गोदारा, अमित वर्मा, अरूण सक्सेना आदि मौजूद थे। प्रारम्भ में आरोग्य के देवता भगवान धन्वन्तरी के चित्र के समक्ष देशी घी का दीपक प्रज्वलित कर सभी के निरोगी की कामना की गई।

जीवन चलने का नाम चलते रहो सुबह-ओ-शाम, के रस्ता कट जाएगा मितरा...

- कई चिकित्सक कर रहे रोजाना साइक्लिंग, दे रहे सकारात्मकता का संदेश
- डॉ. माहेश्वरी दम्पती का साथ में पौधरोपण पर जोर, रख-रखाव पर भी गौर

श्रीगंगानगर।

जीवन चलने का नाम, चलते रहो सुबह-ओ-शाम,
के रस्ता कट जाएगा मितरा, के बादल छट जाएगा मितरा,
के दु:ख से झुकना ना मितरा, के इक पल रुकना ना मितरा।

सत्तर के दशक में आई फिल्म शोर में राजकवि इंरदरजीत सिंह तुलसी का लिखा यह गाना आज भी चलते रहने का संदेश देता है, देता रहेगा। इसी संदेश को साकार कर रहे हैं श्रीगंगानगर के अनेक चिकित्सक। कोरोना से बने हालात के बाद रोजाना मीलों साइक्लिंग करते हैं, कुदरत से करीबी बढ़ाते हैं और देते हैं समाज को सकारात्मकता तथा नई ऊर्जा से जुटे रहने का संदेश।

वरिष्ठ न्यूरो सर्जन डॉ. महेश माहेश्वरी एवं उनकी धर्मपत्नी डॉ. सीमा माहेश्वरी साइक्लिंग के दौरान पौधरोपण पर भी जोर देते हैं, ग्रामीणों आदि को पौधे उपलब्ध ही नहीं करवाते इनकी सार-संभाल पर भी नजर रखते हैं। डॉ. दीपक गर्ग, श्रीमती दिव्या गर्ग, वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. अरूण कुमार सी पवार, डॉ. धर्मवीर गुप्ता, डॉ. पी.एस. खुराना, डॉ. मनीष, संजय मुंजराल, अंकित बंसल, हनी भठेजा आदि सुखाड़िया सर्किल से शुरू करते हैं साइक्लिंग का सामूहिक सफर। अधिकतर तीन पुली होते हुए अलग-अलग जगह। दूरी नाप लेते हैं अकसर 30 किलोमीटर से ज्यादा।

साइक्लिंग के दौरान आपस में हथाई, ग्रामीणों आदि से भी बतियाना। कोरोना संबंधी जागरुकता बढ़ाना और देना उपयोगी जानकारी। डॉ. पवार तो भोर के नजारों को भी बखूबी कैद करते हैं। रास्ते में खाळे में कलकल बहते पानी को देखना, कई बार तो फावड़ा हाथ में पकड़ कर किसान की तरह पानी लगाना। एक दिन तो पृथ्वीराजपुरा के रेलवे स्टेशन पर पहुंच रेल परिचालन आदि की जानकारी भी हासिल की। किसी ठेठ देहाती के चाय का पूछने पर मना नहीं करना, कई बार तीन पुली पर पकोड़े भी खाना। कुल मिलाकर ये चिकित्सक अपनी स्वास्थ्य के प्रति सजगता, सक्रियता और सरलता से छाप छोड़ रहे हैं।

उजली-उजली भोर सुनाती, तुतले तुतले बोल...

उजली-उजली भोर सुनाती, तुतले तुतले बोल, अन्धकार में सूरज बैठा, अपनी गठड़ी खोल। हिम्मत अपना दीन धरम है, हिम्मत है ईमान, हिम्मत अल्लाह, हिम्मत वाहेगुरू, हिम्मत है भगवान। ये पंक्तियां भी शोर फिल्म के इस गीत में है। गाने की सभी पंक्तियां इन चिकित्सकों की जिंदादिली पर सटीक बैठती है। अति व्यस्त दिनचर्या के बावजूद सूर्योदय से पूर्व उठने वाले, समाज के सभी वर्गों के भले के लिए जुटे रहने वाले इन चिकित्सकों को सेल्यूट।

कैंसर वाला जबड़ा निकाला और पांव से हड्डी लेकर दोबारा बनाया

9 घंटे के सफल जटिल ऑप्रेशन की चर्चा चहुं ओर ● मुंह, गला व थॉयराइड कैंसर विभाग की विशिष्ट पहचान

श्रीगंगानगर।

टांटिया विश्वविद्यालय परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) के मुंह, गला एवं थॉयराइड कैंसर रोग विभाग ने बहुत बड़ी सफलता हासिल की है। इसकी चर्चा चहुं ओर हो रही है। नाक, कान एवं गला रोग विशेषज्ञ डॉ. महेश के. मोहता, प्लास्टिक सर्जन डॉ. मनोज गर्ग एवं मेक्सीलोफेशियल एंड हेड-नेक ओंको सर्जन डॉ. पी.सी. स्वामी विभाग ने यह उपलब्धि अपने नाम की। करीब 9 घंटे के सफल जटिल ऑप्रेशन से मरीज का कैंसर वाला जबड़ा निकाला और पांव की हड्डी लेकर इसे दुबारा बनाया। पूरे क्षेत्र में ऐसा कामयाब ऑप्रेशन पहली बार हुआ है। करीब 55 साल के मरीज के तम्बाकू, जर्दे से कैंसर के कारण नीचे का पूरा जबड़ा निकालना पड़ा। ऑप्रेशन के दौरान पांव की हड्डी लेकर जबड़ा दुबारा बना दिया गया। इससे जबड़े की शेप और चेहरा नहीं बिगड़ा, मरीज को सही ढंग से खाने-पीने तथा बोलेने में भी अब दिक्कत नहीं है। मेडिसिन के विभागाध्यक्ष डॉ. राकेश सहारण, एनिस्थिजिया के डॉ. आनंद कामरा, डॉ. आनंदिनी राजपूत का भी इस सफलता में योगदान रहा। जन सेवा हॉस्पिटल के मुंह, गला एवं थॉयराइड कैंसर रोग विभाग की कुछ समय पहले विधिवत शुरूआत होने के बाद मरीजों को बहुत लाभ मिलने लगा है और नियमित रूप से ऑप्रेशन आदि के माध्यम से लाभ पहुंचाया जा रहा है। लगातार सफलताओं से इस विभाग की विशिष्ट पहचान बन गई है। गत दिनों जन सेवा हॉस्पिटल के मुंह, गला एवं थॉयराइड कैंसर रोग विभाग ने लगभग 57 साल के कैंसर मरीज का सात घंटे के जटिल ऑप्रेशन से गाल निकाला था और हाथ से मांस लेकर दुबारा गाल बनाया तथा खून की नसों को गर्दन की नसों से जोड़ा था। विभाग में इस तरह की सुविधा नियमित रूप से रियायती दर पर उपलब्ध है। विशेषज्ञ चिकित्सकों, अनुभवी-प्रशिक्षित स्टाफ तथा अत्याधुनिक विश्वस्तरीय उपकरणों की वजह से कैंसर मरीजों के बड़े केन्द्र के रूप में जन सेवा हॉस्पिटल लाभान्वित कर रहा है।

डॉ. महेश के. मोहता

डॉ. मनोज गर्ग

डॉ. पी.सी. स्वामी

कोरोना रिकवरी में बहुत फायदेमंद है फिजियोथैरेपी

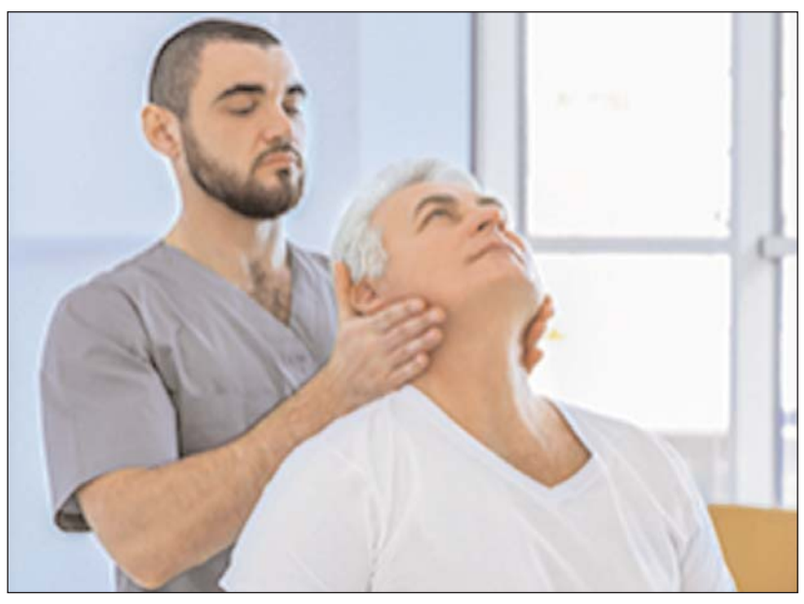

डॉ. मुकेश गोयल, डीन मेडिकल पैरामेडिकल एंड एलाइड हेल्थ साइंस, टांटिया विश्वविद्यालय

कोरोना की रिकवरी में फिजियोथैरेपी बहुत ही कारगर है। सिर्फ दर्द के निवारण, लकवा, पोस्ट सर्जरी, बैलेंस प्राबॅलम, चक्कर आने, सर्वाइकल, कमर दर्द, घुटनों के दर्द, नसों की जकड़न तक ही फिजियोथैरेपी सीमित नहीं है। वर्तमान में यह प्रत्येक रोगी के लिए जरूरी है। कुछ माह से पूरा विश्व कोरोना वायरस कोविड-19 नाम की वैश्विक महामारी से जूझ रहा है, यह बड़ी आसानी से एक से दूसरे मरीज में फैल रही है।

कोरोना रिकवरी में फिजियोथैरेपी बहुत उपयोगी है। इस बीमारी के लक्षणों में तेज बुखार, सूखी खांसी, बदन दर्द, सांस लेने में तकलीफ, गले में दर्द होना आदि शामिल है। यह वृद्ध लोगों, दिल के मरीज, मधुमेह के रोगी, पहले से अन्य किसी बीमारी से ग्रसित तथा कम रोग प्रतिरोधक क्षमता वालों में खतरनाक रूप धारण कर लेती है। फिजियोथैरेपी के माध्यम से एक्सरसाइज कर के शरीर की कोरोना वायरस से लड़ने की क्षमता बढ़ाई जा सकती है। फेफड़ों की कसरत से इनको मजबूत किया जा सकता है। ऐसा करने से कोरोना वायरस प्रतिकूल असर नहीं डाल पाएगा। कोरोना पॉजिटिव आने की स्थिति में रिकवरी के लिए फिजियोथैरेपिस्ट महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब मरीज के फेफड़े कमजोर हो जाते हैं, फेफड़ों में बलगम भर जाता है तो निकालने के लिए फिजियोथैरेपी की तकनीक बहुत काम आती है। लूज कर बाहर निकाला जाता है, इससे फेफड़े आराम से काम करने लगते हैं और पर्याप्त हवा पहुंचने लगती है। मरीज जब छुट्टी लेकर अपने घर जाता है, तब फेफड़े कमजोर होते हैं। फिजियोथैरेपिस्ट उनके फेफड़े मजबूत करने के लिए तरह-तरह की कसरत करवाते हैं, जिससे कि उन्हें आराम मिले। कोरोना से ठीक होने के बाद भी मरीजों के शरीर में दर्द रहता है, मांसपेशियों में जकड़न रहती है, उसे समय आधुनिक मशीनों से फिजियोथैरेपिस्ट दर्द को ठीक करते हैं तथा मांसपेशियों को लचीला बनाते हैं।

...लें संकल्प नशा मुक्ति का अगर यह जहर न फैले गांव-शहर

नशे के अंधेरे में आशा का उजाला साबित हो रहा जे.आर. टांटिया चैरिटेबल नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र

श्रीगंगानगर।

नशा विनाश है, नशा जहर। लें संकल्प नशा मुक्ति अगर, यह जहर न फैले गांव-शहर। इस तरह की सोच और संकल्प के साथ समर्पण भाव से जुटा हुआ है जे.आर. टांटिया चैरिटेबल नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र। हनुमानगढ़ रोड पर टांटिया विश्वविद्यालय परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) परिसर में चल रहा यह केंद्र नशे के अंधेरे में आशा का उजाला साबित हो रहा है। श्रद्धेय डॉ. श्यामसुन्दर जी टांटिया ने वर्ष 1986 में नशा मुक्ति तथा मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में जो पौधा लगाया था, वह वट वृक्ष बन चुका है और श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ जिले के ही नहीं पंजाब-हरियाणा सहित देश के अनेक राज्यों के लोग इस केंद्र के माध्यम से लाभान्वित हो रहे हैं। केंद्र के समन्वयक डॉ. विशु टांटिया, परियोजना निदेशक डॉ. विकास सचदेवा, साइकोलॉजिस्ट एंड काउंसलर डॉ. मनीष अरोड़ा, फिजिशियन डॉ. के.के. अरोड़ा एवं पूरी टीम मनोयोग से जुटी रहती है तथा सफलता प्राप्त कर मरीजों तथा उनके परिजनों की अपेक्षाओं पर खरा उतरती है।

विशेषताएं ही विशेषताएं

जेआर टाटिया चैरिटेबल नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र विशेषताओं से भरपूर है। नशा पीड़ितों को बुरा ना मान कर बीमार व्यक्ति माना जाता है, प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाता है। उपयोगी और जीवन बदलने वाले साहित्य को आधार रख कर कक्षाएं होती है, विचारों में परिवर्तन किया जाता है। इससे बीमारी के प्रति एक नई और व्यावहारिक समझ विकसित कर पाते हैं तथा नशे में किए गए गलत कार्यों के कारण जो अपराध बोध और भय आ जाता है, उससे मुक्त होते हैं। केंद्र में पीड़ित व्यक्ति को शुद्ध शाकाहारी, पौष्टिक और सात्विक आहार दिया जाता है। पीड़ितों से भोजन नहीं बनवाया जाता। स्वच्छ पानी के लिए आर ओ प्लांट लगा हुआ है। केंद्र में वाटर कूलर, वाशिंग मशीन, गीजर, अग्निशमन यंत्र ,ऑक्सीजन सिलेंडर तथा अन्य आवश्यक चिकित्सकीय उपकरण मौजूद है। नशा पीड़ितों को केंद्र में लाने के लिए वाहन सुविधा उपलब्ध है। पूरे समय वोलेंटियर मौजूद रहते हैं।

हाथों में पत्थर नहीं फिर भी चोट देता है...

हाथों में पत्थर नहीं फिर भी चोट देता है, यह नशा है जनाब जो अच्छे-अच्छे घर तोड़ देता है। इस तरह के संदेश केंद्र के माध्यम से समय-समय पर दिए जाते हैं। शासन-प्रशासन का पूरा सहयोग किया जाता है, नशा मुक्ति शिविर लगाए जाते हैं। योग दिवस, मादक पदार्थ एवं तस्करी निषेध दिवस, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस जैसे विशिष्ट महत्व के दिवस केंद्र मनाता है और समाज में सकारात्मक संदेश देता है। नशे के खिलाफ वातावरण बनाने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाकर नशा मुक्ति की मुहिम को बल दिया गया है। जन सेवा हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. राघव टांटिया, डॉ. मोहित टांटिया, अतिरिक्त निदेशक पवन गुप्ता आदि की सहभागिता इनमें रही है। वर्तमान में श्रीगंगानगर के जिला कलक्टर एम.पी. वर्मा एवं पुलिस अधीक्षक राजन दुष्यंत के नेतृत्व में चल रहे अभियान में सक्रिय सहभागिता निभाई जा रही है।

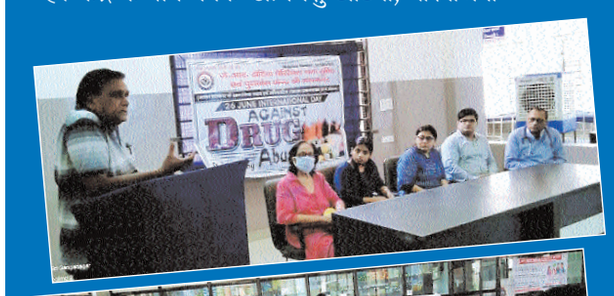

योग, प्राणायाम व ध्यान

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए नियमित योग, प्राणायाम, ध्यान करवाया जाता है। विभिन्न प्रकार के इनडोर खेलों के माध्यम से नशे से दूर, अन्य मनोरंजन के साथ जीना सिखाया जाता है। यह उन विशिष्ट नशा मुक्ति केंद्रों में से एक है जहां नशा पीड़ितों को खुला परिवेश उपलब्ध है। धूप लेते है, बैडमिंटन, चेयर रेस आदि खेल खेले जाते हैं। लगातार नशे करने के कारण व्यक्ति के विचार अस्थिर तथा संकल्प शक्ति कमजोर हो जाती है, इस समस्या को दूर करने लिए आयुर्वेदिक चिकित्सक शिरोधारा करवाते हैं, यह विचारों में स्थिरता लाने के लिए बहुत पुरानी तकनीक है। बहुत से लोगों को मानसिक परेशानियां जैसे इंसोमेनिया, एंजाइटी, डिप्रेशन, फोबिया या अन्य हो जाती है उनके निदान के लिए मनोचिकित्सक (साइकिएट्रिस्ट) की आवश्यकता होती है, यह सुविधा केंद्र में उपलब्ध है। कुंजल क्रिया, वस्ति, शंख प्रक्षालन आदि योग क्रियाओं के जरिए शरीर में फैले जहर को निकाला जाता है।

प्रबंधन पर पूरा जोर, इसलिए चर्चा चहुं ओर

नशा मुक्ति के लिए प्रबंधन पर पूरा जोर दिया जाता है, इसलिए केंद्र की चहुं ओर चर्चा है। अचानक नशा बंद करने से जो शारीरिक तथा मानसिक परेशानियां होती है, यदि ठीक से इसका प्रबंधन नहीं किया जाए तो अत्यधिक मात्रा में नशा करने वाले की मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए केंद्र में नशा मुक्ति के विशेषज्ञ साइकिएट्रिस्ट, डॉक्टर तथा नर्स की सुविधा उपलब्ध है। ये विथड्रावल मैनेजमेंट करते हैं, इससे एकदम से नशा बंद करने के बाद भी किसी तरह का कष्ट नहीं होता है। लंबे समय तक नशा करने के कारण शरीर विषाक्त हो जाता है, विष को शरीर से निकालने के लिए शरीर का विषहरण दवाइयों से चिकित्सक की देख-रेख में किया जाता है। नशे की तलब कम करने के लिए होम्योपैथी दवाएं दी जाती हैं। आयुर्वेद के मुताबिक नशे से शरीर में वात, पित्त या कफ में से कोई एक या ज्यादा दोष बहुत ज्यादा बढ़ जाते हैं। इन्हीं दोषों को बैलेंस करने के लिए आवश्यक आयुर्वेदिक उपचार भी किया जाता है।

लिया जाता है कई तकनीकों का सहारा

सफलता के लिए कई तकनीकों का सहारा लिया जाता है। अल्कोहॉलिक्स एनॉनिमस (एए) शराब छुड़ाने वालों की विधि है। इसके सभी सदस्य ऐल्कॉहॉलिक रह चुके हैं। इसे अल्कोहॉलिजम के शिकार लोगों का परिवार कहें तो बेहतर होगा। यहां किसी तरह की फीस नहीं ली जाती। मीटिंग में सभी सदस्य अपने अनुभव और उन गलतियों को शेयर करते हैं, जो उन्होंने शराब की वजह से कीं। नए सदस्य को एक ट्रेनर को सौंप दिया जाता है, जिसे स्पॉन्सर कहते हैं। स्पॉन्सर उनके साथ हमेशा कॉन्टैक्ट बनाए रखता है। इसके लिए लगातार 90 मीटिंग अटेंड करने की सलाह दी जाती है। एए की तरह ही अलनोन एक ग्रुप है। यह शराबी के परिवार के लोगों को गाइड करता है कि वे शराब छुड़ाने में क्या और कैसे मदद करें। परिवार को समझने और सहानुभूति देने में अलनोन की मीटिंग्स फायदेमंद होती हैं।

टीयू में प्रतिमाएं देती हैं संदेश सभी, आगे बढ़ते रहें और मनोबल कम न हो कभी

श्रीगंगानगर।

कारीगरों ने ऐसा तराशा है, देखने वाले देखते रह जाते हैं

टांटिया विश्वविद्यालय (टीयू) के विशाल परिसर में कई जगह लगी प्रतिमाएं इसकी छटा में चार चांद लगा रही हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थियों और समग्र समाज को सद्कर्म से आगे बढ़ते रहने, मनोबल मे कभी कमी नहीं आने देने जैसे अनेक सन्देश दिए जा रहे हैं। कारीगरों ने बड़ी मेहनत और लगन से प्रतिमाओं को ऐसा तराशा है, जो देखता है वह देखता ही रह जाता है। टांटिया समूह के श्रद्धेय डॉ. श्यामसुन्दर जी टांटिया की विशाल प्रतिमा हो या महर्षि चरक की, सभी को स्थापित करने का उद्देश्य यही रहा है कि महापुरुषों एवं विशिष्ट जनों की मूर्तियों से सभी जने उनके विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सकारात्मक संदेश ग्रहण करें।

टांटिया समूह के श्रद्धेय डॉ. श्यामसुन्दर जी टांटिया की विशाल प्रतिमा।

बापू के नाम से पूजनीय अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी।

होम्योपैथी के जनक सैमुएल हैनिमैन जिन्होंने समान से समान से इलाज की अवधारणा प्रस्तुत की।

विद्या और संगीत, कला, साहित्य की देवी मां सरस्वती का जन-जन के मन में वास है।

युग पुरुष स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिन 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

एक हाथ में तराजू, आंखों पर पट्टी वाली प्रतिमा है न्याय की देवी की।

महर्षि चरक आयुर्वेद विशारद के रूप में वंदनीय। पाचन, चयापचय और शरीर प्रतिरक्षा की अवधारणा दुनिया के सामने रखी।

तीन कबूतर और दो जुड़े हाथ: जन सेवा हॉस्पिटल बीमारियों से मुक्ति में देता है साथ।

जन सेवा हॉस्पिटल की प्रतिबद्धता- जुनून और दया का संदेश देती ममतामयी मां की प्रतिमा।

परिवर्तन सृष्टि का नियम: बदलते पैसों की आकृतियां एक ग्रीक दार्शनिक का संदेश देते हुए।

पुण्य स्मृति: श्रद्धेय डॉ. श्यामसुन्दर टांटिया
मार्गदर्शक: डॉ. विशु टांटिया
मुख्य सम्पादक: डॉ. विकास सचदेवा (मो. : 9461221718)
कार्यकारी सम्पादक: राजकुमार जैन (मो. : 8005519250)
पुण्य स्मृति: श्रद्धेय श्रीमती शकुन्तला देवी टांटिया

टांटिया समूह द्वारा जनहित में निःशुल्क प्रसारित-प्रचारित। सर्वाधिकार सुरक्षित। बिना अनुमति, दुर्भावनावश, किसी भी अंश को कांट-छांटकर या सौजन्य उल्लेख के बिना उपयोग में लाए जाने पर दण्डनीय कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। - मुख्य सम्पादक
मुख्य कार्यालय : टी मीडिया, द्वितीय तल, जन सेवा हॉस्पिटल, टांटिया विश्वविद्यालय परिसर, हनुमानगढ़ मार्ग, श्रीगंगानगर-335002